Raga of the Month January 2026 Raga Yogashri/ ShreeKalyan

राग योगश्री / राग श्रीकल्याण

राग **योगश्री** की मूल संकल्पना एवं निर्मिती स्वर्गीय पंडित चिदानंद नगरकरजी की है। इस राग की निर्मिती के लिए पंडित नगरकरजी ने श्री और कल्याण इन दो रागों का संयोग किया है। पूर्वांग में श्री और उत्तरांग में कल्याण यह रचनाकार की मूल कल्पना है। अतः इस राग में कोमल रिषभ, तीव्र मध्यम और अन्य स्वर शुद्ध लगते हैं। वादी सा और संवादी पंचम माना गया है। यह सायंगेय राग है।

आरोह : सा रे ग रे, मं प ध प, नि ध प ध प, सां । **अवरोह** : सां नि ध प, मं प ध प, रे, ग रे सा ।

पंडित नगरकरजी ने इस राग के विलंबित और मध्यलय की रचनाओं के सिर्फ मुखड़े की रचना की थी। पंडित यशवंत महालेजी ने रचनाकार की मूल कल्पना ध्यान में रखते हुए उन बन्दिशोंको को पूर्ण किया है।

राग **श्रीकल्याण (प्रकार) १** - यही स्केल (कोमल रे, तीव्र मध्यम और अन्य स्वर शुद्ध) के आधार पर पंडित कुमार गंधर्वजी ने श्रीकल्याण (प्रकार १) इस राग की निर्मिती की है। दोनों रागों के स्वरूप में कुछ समानता है ऐसा प्रतीत होता है; मगर दोनों रचनाकारों ने अलग सोच रखते हुए राग का वैशिष्ट्य पूर्ण प्रदर्शन किया है।

राग **संकेत कल्याण**- पंडित द के जंगमजी ने अपने "सूरसागर" इस किताबमे इन्हीं स्वरों के प्रयोगसे नया राग स्वरूप प्रस्तुत किया है। इस राग में आरोह में गंधार और धैवत वर्जित होने से उसका स्वरूप अलग है।

राग **कल्याणश्री**- श्री और कल्याण इन रागों के ही संयोग से निर्माण होनेवाले राग कल्याणश्री का वर्णन पंडित विनायकराव पटवर्धनजी के राग विज्ञान इस किताब के आठवें भाग में किया है, मगर उसकी विस्तृत जानकारी उपलब्ध नहीं है।

राग **श्रीकल्याण (प्रकार २)** यही नाम से और एक राग का ऑडियो वेबसाइट पर उपलब्ध है; मगर उसका स्वरूप बिलकुल अलग है।

आज के ऑडियो में पंडित यशवंत महालेजी ने गायी हुई राग योगश्री की दो बंदिशें सुनेंगे और अंत में पंडित कुमार गंधर्वजी ने गाया हुआ राग श्रीकल्याण (प्रकार १) का अंश सुनेंगे।

आभार - पंडित यशवंत महाले.

01-01 -2026.

Link to the list of 180+ Raga of the month articles

@ Archive of ROTM Articles https://oceanofragas.com/Raga_Of_Month_Alphabetically.aspx